Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

मीडिया लिटरेसिः समाचार में भ्रामक सूचना के आलोचनात्मक बोध की निपुणता के प्रभावकारी तत्वों का अन्वेषण

डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. बिंदु शर्मा

सारांश

मीडिया संदेशों को सही अर्थों में समझने के लिए पूरे संसार में विशेषज्ञ मीडिया संचेतना (media literacy) को ही विकल्प मान रहे है । इस संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन भारतीय वयस्कों के समाचार संचेतना (news literacy) स्तर को जानने की दिशा में एक अन्वेयषण है। शोध परिणामानुसार अधिकांश प्रतिभागियों का मीडिया लिटरेसि स्तर कम है। कई प्रत्यैर्थियों की समाचार मीडिया की बोधपूर्ण जानकारी तर्कसंगत पाई गई जो दर्शाता है कि औपचारिक मीडिया शिक्षा के बिना भी मीडिया प्रयोगकर्ता जनसंचार माध्यपमों के सजग प्रयोग से कुछ सीमा तक मीडिया लिटरेट बनते हैं। अध्यतयन भारत में मीडिया लिटरेसि शिक्षा की आवश्यिकता को रेखांकित करता है ।

भूमिका

21 वीं सदी ने विश्वम को अतुल सूचना समृद्धि दी है जिसने मानवता के विकास में महती भूमिका निभाई है। दूसरा पक्ष यह है कि सूचना की इस सदी में महत्वपूर्ण सूचनाओं के प्रवाह के साथ भ्रामक सूचना की बहुतायतता व उससे जुड़े जोखिम पहले से कहीं अधिक हो गए हैं जिसने ज्ञान परंपरा के सामने चुनौती खड़ी की है। अर्थात सूचना के विस्फोट के इस युग में उपयुक्तक, सार्थक व विश्वसनीय संदेशों का चयन करना मनुष्य जाति के समक्ष एक दुर्बोध प्रश्न है । सूचना का दायरा व्यापक होना सिर्फ एक पहलू है। मूल प्रश्न यह है कि संदेशों की सत्यकता को किस कसौटी से परखें, यह युगों से मानव के समाने जटिल प्रश्न बना रहा है। जनसंचार माध्यसमों के अपरिमेय विस्तोर के युग में यह प्रश्न जटिल से जटिलतम हो गया है । वैसे सूचना के साथ पक्षपात व पूर्वाग्रह का जोखिम तो सदियों से बना रहा है ही ।

प्रोफेसर रेनी हॉब्सा ने कहा '' यद्यपि सत्य की अवधारणा व इसकी अनिश्चित व परिवर्तित होती 'वेल्यू' को स्पष्ट परिभाषित करना दार्शनिकों, इतिहासविदों व अन्य विद्वानों के लिए पूरे मानवीय इतिहास में एक बड़ी चुनौती रहा है तथापि सूचना की सहज उपलब्धता के युग में सूचना में सत्य का मूल्य निर्धारित करना और भी कठिन हो गया है'' ।

अधिकांश विद्वान अतिशय सूचना (information overload) इस सदी की चुनौती मान रहे हैं । इस संदर्भ में प्रो पॉटर (2005) ने कहा '' सूचना का सकंट यह नहीं है कि इस तक पहुँच कैसे बनाई जाए, वास्तविक समस्या) ये है कि इतनी सारी सूचना के साथ कैसे तालमेल बिठाया जाए। अगर कोई पाठक अमेरिका में केवल वर्ष 2005 में प्रकाशित पुस्तंकों को पढ़ना चाहे तो उसे एक साल तक लगातार चौबीस घंटे बिना रुके पढ़ना पड़ेगा और वह भी सिर्फ 8 मिनट में एक

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्था न , कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय कुरुक्षेत्र
एसोसिएट प्रोफेसर, जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्था न , कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय कुरुक्षेत्र

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

किताब का पाठन पूरा करते हुए'' ।

सूचना की अति की यही स्थिति समाचार व मनोरंजन आधारित टीवी चौनलों द्वारा उत्पा दित कन्टेन्टा के साथ भी है । गत वर्षों में पूरे संसार में लगभग 31 मीलियन घंटे के टीवी कार्यक्रमों का निर्माण हर साल होता रहा है। यह आंकड़ा प्रस्तुत करने वाले विद्वान लेमन व वेरियन (2003) ने कहा '' अगर कोई व्यक्ति पूरे संसार में एक साल में तैयार किए गए टीवी कन्टेन्ट को देखना चाहे तो उसे 3500 वर्ष चाहिए और वो भी बिना रुके लगातार टीवी देखने पर यह संभव हो पाएगा'' ।

सूचना प्रसारण मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार भारत में ही इस समय करीब 798 टीवी चौनल हैं । इनमें करीब 397 तो समाचार चैनल ही हैं (टेलिकॉम टॉक इन्फो,2014) । इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि मीडिया जनित सूचना का विस्तार कितना अधिक हो चला है। इस परिदृश्य में एक अंतर्निहित सत्य ये है कि जनसंचार माध्यमों के व्यापक विस्तार में सूचना का अर्थ ही 'मीडिया जनित सूचना' हो गया है। लोगों को सूचना के बहुत सारे विकल्प उपलब्धक होना एक दृष्टि से सही है क्योंकि इससे विशिष्ट सूचना की मांग पूरी होती है, लेकिन इसके साथ भ्रामक सूचना के बढ़ते जोखिम के प्रति सजग भाव दूसरा महत्व पूर्ण प्रश्नो है। इसकका हल मीडिया लिटरेसि व संदेश विश्लेषण की निपुणता के मॉडल्स व थ्योशरी के माध्यिम से खोजा गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र इस तर्क से आगे बढ़ता है कि सूचना मीडिया जनित हो या किसी अन्य स्रोत से प्राप्त हुई हो, उसके संदर्भ में यह कहना संभव नहीं है कि सम्प्रेषक संदेश में सत्य को पूरी तरह संजो पाया हो।

समाचार व अन्यो मीडिया के साथ जुड़े विश्वसनीयता व उपयोगिता के प्रश्नत का अन्वषेण करते हुए इस दर्शन को जानना जरूरी है कि कौन से संदेश सत्य का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं और कौन–से भ्रामक सूचनाएं पैदा कर रहे हैं, यह किस कसौटी पर परखा जाए ? इसका कोई तकनीकी पैमाना अस्तिमत्वा में नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर संदेश को अधूरा या पूर्वाग्रह से ग्रसित मानने की पूर्वधारणा गढ़ ली जाए। बल्कि तर्कसंगत दृष्टि से यह जानना जरूरी है कि कोई संदेश किन सीमाओं के भीतर दिया गया है। एरिस्टॉटल जैसे विद्वान का भी तर्क है ' ' सत्यक का ज्ञान कुछ सीमाओं में ही संभव हो सकता है'' । अर्थात वास्तविकता के बखान का दायरा बहुत बड़ा है और हर सूचना दाता की अपनी सीमाएं होती हैं।

आज के इस तकनीक प्रधान युग में विश्वसनीयता का प्रश्नथ उतना ही प्रबल है जितना तकनीक रहित समाज में सूचना सम्प्रेषण में था। "ऐसा नहीं कि डिजिटल मीडिया के युग में सूचना की विश्वसनीयता को जाँचने की चुनौती कोई सरल हो गई, यह उतनी ही विकट है जितनी युगों से सूचना प्राप्त करने वाले किसी भी व्यक्ति के समक्ष होती थी" (मेटजेजर व फलेंगिन, 2008) ।

प्रस्तुत अध्ययन वयस्क मीडिया उपभोक्ताओं की समाचार मीडिया सिस्टटम के प्रति बोधपूर्ण समझ व समाचार आधारित सूचना का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की निपुणता पर केंद्रित है। समाचार रूप में जानकारियाँ तो एक ऐसी सुगठित व्यवस्था से होकर आती है जिनका प्रायः प्रथम उद्देश्य सूचना को बाजार की दृष्टि से प्रभावोत्पादक बनाना है ताकि समाचार उपभोक्ता की कुछ पलों में वहां नजर बंधे और वह उसे तुरंत विश्व सनीय माने। ऐने जेनिस्टिस का तर्क है ''

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

आज के स्वोतंत्र मीडिया परिवेश में समाचार की विश्वसनीयता का संदर्भ सिर्फ समाचार मीडिया के पूर्वाग्रह तक नहीं है बल्कि इसमें तथ्यों की परिशुद्धता व उसमें विभिन्न अभिमतों को प्रस्तुंत करना भी शामिल है''। इसीलिए सर्वप्रथम सूचना के विहंगम स्वरूप और उसमें पक्षपात व पूर्वाग्रह के प्रभावी कारकों को विभिन्न कोणों से समझना जरूरी है जिसका विश्लेषण यहाँ किया जा रहा है।

भ्रामक व अतिशय सूचना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भ्रामक संदेश जनसंचार माध्यमों की ही उपज हैं, ऐसा कहना उचित नहीं होगा। पूर्णतः पक्षपात रहित सूचनाएं किसी युग में उपलब्ध थीं, ऐसा दावा करने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। प्राचीन प्रमाणों के अनुसार 'प्रोपेगंडा' व 'पक्षपात' युगों से संदेशों के साथ लिपटे चले आ रहे हैं। हजारों साल पहले के भारतीय साहित्य दर्शन की ग्रंथावली 'मीमांसा', 'न्याय' (5 हजार वर्ष पूर्व) मुख्यतः हर सूचना के प्रति 'स्वस्थ संदेह भाव' (healthy doubt) की मांग करते हैं । यह दर्शन संदेश प्राप्तकर्ता को अभिप्रेरित करता है कि वह हर संदेश की सत्यता को अपने व्यवहार की कसौटी पर जाँच कर स्वीकार करे। भारतीय दर्शन में हजारों साल पहले बुद्ध की अपील का उल्लेख है '' तापात् छेदात् निकसात् तद् ग्राह्यम मदवचः न तु गौरवात्'' (अश्व घोष 1990, श्रीवास्तपव,2013)।

अर्थात '' किसी संदेश को ग्रहण करने में तत्परता मत दिखाओ, इस पर महज इसलिए विश्वास मत करो कि वो किसी विख्यात या महान समझे जाने वाले वक्ता ने दिया बल्कि सहज भाव से अपने अनुभव व संज्ञानात्मक बोध के अनुरूप उसका विश्लेषण करके इसे ग्रहण करो।''

372 बीसी में चीनी विद्वान मेन्सियस ने कहा '' अगर आप ये समझते हैं कि जो लिखा गया है वह पूर्णतः सही है तो दुनिया में कोई पांडुलिपी या किताब होनी ही नहीं चाहिए''। (मेन्सियस वेबपेज, विकिपीडिया)। प्राचीन ग्रीक में राजनीतिक शिक्षण के दौरान आलोचनात्मक विश्ल्ेषण सिखाया गया और अमेरिका की मीडिया लिटरेसि विशेषज्ञ रेनी हॉब्स व जेन्सन तो वहीं से मीडिया लिटरेसि का आरंभ माना है। एरिस्टोबटल ने वक्ता की विश्वासनीयता का प्रश्नर उठाते हुए मॉडल दिया कि '' वक्ता का लुभावना भाषण ही काफी नहीं है, उसकी व्य क्ति गत विश्वदसनीयता भी परिलक्षित होनी चाहिए''(गिफिन 2009)।

समाचार पत्रों में प्रकाशित तथ्यहीन समाचार व प्रोपेगंडा आधारित सूचनाएं प्रथम विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण माना जाता है। इस दौर पर अध्ययन करने वाले पुलित्जर पुरस्कार विजेता वॉल्टर लिपमैन ने कहा था '' विकृत सूचनाएं मनुष्य के मस्तिष्क में अंतर्निहित हैं। प्रायः लोग तथ्यों का वर्णन करने से पहले अपना मन बना लेते हैं कि इन्हें कैसे प्रस्तुत करना है जबकि होना यह चाहिए कि तथ्य एकत्रित कर उनका अच्छे से विश्लेषण करके निष्कर्ष पर पहुंचा जाए''। अतएव सूचना में भ्रामकता, पक्षपात व प्रोपेगंडा का पुट होने के प्रमाण प्राचीन समय से उपलब्ध हैं। मास मीडिया के विस्तार के युग में एक पृथक परिदृश्यों यह उभरा कि अमुक संदेशों के त्वरित प्रसार के जोखिम कहीं अधिक बढ़ गए। उक्त विश्लेषण से यह भी स्पष्ट है कि जनसंचार माध्यमों के संदेशों का आलोचनात्मक विश्लेषण सीखाने वाला 'मीडिया लिटरेसि' व 'न्यूमज लिटरेसि' का नूतन विज्ञान विभिन्ने संदेशों के आलोचनात्मटक विश्लेषण करने की शिक्षा देने वाली उक्त वर्णित प्राचीन परंपरा से बहुत भिन्न नहीं है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यप में देखे तो अतिशय सूचना (information overload) की अवधारणा पर भी बहुत पहले से विचार होने लगा था। फ्रेंच दार्शनिक डाइडरॉट ने दो सदी से अधिक समय पहले कहा '' जैसे–जैसे सदियाँ आगे बढ़ेंगी तो पुस्तकों की संख्या इतनी अधिक हो जाएगी कि

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

पुस्तकों से सीखना इतना मुश्किल हो जाएगा जितना की पूरे ब्रहमांड को अपने खुद के अनुभव से देखकर समझना ''। (डेनिस डाइडरॉट ,इन्सा इक्लॉपपीडिआई 1755)। समाजिक वैज्ञानिक जॉर्ज सीमल ने 1888 के आसपास अतिशय सूचना की अवधारणा का उल्लेख कर दिया था। उसके उपरांत विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसका प्रयोग किया। इस अवधारणा के विकास से ही दुनिया में एक जाग्रति आई कि हर सूचना हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण नहीं हो सकती।

मीडिया जनित सूचना व दुष्प्रभाव लोगों की मीडिया पर बढ़ती निर्भरता ने संदेशों के दुष्प्रभावों की कड़ी चुनौती खड़ी की है। मीडिया के दुष्प्रभावों को समझना इतना सरल नहीं है। इस संदर्भ में क्रिसटिअन टॉइनसन का गार्डियन का तर्क है कि ''एक टीवी ब्रॉडकास्टनर उनके उद्योग से जनित कार्बन गैसों को तो नियंत्रित कर सकता है लेकिन उसके द्वारा उत्पादित संदेशों के दुष्प्रभावों को जानने या नियंत्रित करने का कोई मेकेनिज्म उनके पास नहीं है ''।

लंदन यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर डेविड बकिंगहम ने बच्चों पर मीडिया के व्यापक प्रभाव का चित्रण करने वाली अपनी पुस्तक में कहा '' पिछले बीस–तीस बरसों के अंतराल में बचपन का स्तर और इसके बारे में हमारी मान्यता में अस्थिरता आ गई है। बचपन व व्यक्ति की आयु के अन्य चरण– किशोर अवस्था, युवा अवस्था– आदि में अंतर नहीं खड़ा हो पा रहा है''। मीडिया संचेतना का यह नूतन विज्ञान पूरी तरह से मीडिया प्रयोगकर्ता को हानिकारक संदेशों के प्रति पूर्ण सुरक्षा की गारंटी तो नहीं है लेकिन काफी हद तक इन दुष्प्रभावों को समझने का बोध पैदा जरूर करता है।

मीडिया संचेतना (लिटरेसि) अर्थ एवं अवधारणाः मीडिया संदेश लोगों के लिए महज 'स्पून फीडिंग' न हो जाए, इसके लिए पश्चिम के विद्वानों ने मीडिया संचेतना की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जो आज विश्व में स्थापित हो चुकी है।

इस अवधारणा का केंद्रीय भाव मीडिया प्रयोगकर्ताओं को मीडिया संदेशों के लिए सजग बनाना है ताकि वो मीडिया द्वारा प्रस्तुत सूचनाओं के पूर्ण प्रभाव में आने की बजाए सूचना पर खुद का नियंत्रण बनाएं, प्रभावशाली संदेशों की आलोचनात्मक संवीक्षा(critical scrutiny) करके खुद को संदेशों के हानिकारक प्रभावों से सुरक्षित करे और यह स्पष्ट तौर पर जान सकें कि संदेश देने वाला हमें वास्तव में क्या विश्वालस दिलाना चाहता है । मीडिया लिटरेसि शब्द मूलतः जर्मन भाषा के (Medienkompetenz) शब्द के निकट माना जाता है। अंग्रेजी में इसका अनुवाद तो मीडिया 'कम्पिटेन्सि' के तौर पर किया जाता है लेकिन यहां मीडिया निपुणता का भाव है कि हम मीडिया के काम करने के तरीकों के बारे ऐसा बोध अर्जित कर सकें कि उसके द्वारा दिखाई गई चीजों का सटीक आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकें।

फ्रियर प्रोजेक्ट के विशेषज्ञों ने इस संदर्भ में कहा '' जब मीडिया प्रयोगकर्ता आलोचनात्मक विश्लेषण करता है तो उसका यह बोध विकसित होता है कि मीडिया संदेश में कहां पूर्वाग्रह व पक्षपात का भाव है''।

यह विचार मीडिया लिटरेसि के मूल भाव को दर्शाता है। इस संदर्भ में मीडिया लिटरेसि विशेषज्ञ आर्ट सिल्वर ब्लैट (2009) ने कहा '' वास्तव में एक संगठन के रूप में काम करते हुए संदेश निर्माण करने की मीडिया कार्यप्रणाली की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि उसमें बिना किसी सुविचारित भावना के भी बहुत लोगों के निष्कर्ष संदेश में स्वयं जुड़ते चले जाते हैं। इस तरह समाचार मीडिया का एक संदेश अनायास रूप से एक समूह के विभिन्न लोगों के निष्कर्ष का

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

परिणाम होता है। ऐसे में किसी की सुविचारित भावना से संदेश को तोड़ने मरोड़ने का प्रश्न ही निरर्थक हो जाता है''। मीडिया लिटरेसि विशेषज्ञों का मत है कि नागरिक लोकतंत्र में कैसे प्रतिभागिता करते हैं, यह उनके मीडिया के जागरूक उपभोग पर निर्भर करता है। पश्चिोम के विद्वानों का तर्क है ''जिस व्यक्ति को मीडिया व्यपवस्था , इसकी कार्यशैली का बोध है वह बहुत आसानी से देश के सामाजिक, आर्थिक व अन्यय सार्वनजनिक महत्व के विषयों पर बहुत उपयुक्तम व स्पष्ट अभिमत बना पाता है और इन विषयों पर तार्किक रूप से अपने विचार रख पाता है''(मार्टिनसन , 2009)।

मीडिया संचेतना में क्या शामिल नहीं है : मीडिया संचेतना की अवधारणा के साथ यह जोखिम जुड़ा हुआ है कि प्राय इसका अर्थ केवल मीडिया में दोष ढूँढना मान लिया जाता है । पश्चिम के विद्वानों ने इस गलत धारणा को दूर करने के लिए अलग से कार्य किया । इस संबंध में अमेरिका, कैनेडा के विभिन्न विद्वानों के निष्कार्षों को 'सेंटर फॉर मीडिया लिटरेसि' ने प्रकाशित किया । इसके महत्व पूर्ण बिंदु हैं :

1. मीडिया पर आलोचनाओं का प्रहार करना मीडिया लिटरेसि नहीं है, 2. मीडिया लिटरेसि का यह अर्थ नहीं कि मीडिया का प्रयोग करना ही बंद कर दो बल्किं इसका संदेश है कि इसे ध्यान पूर्वक देखो, संदेशों के प्रति स्वलस्थर आलोचनात्मेक समझ बनाओ, 3. मीडिया उपभोग सक्रिय नागरिक बनने के लिए जरूरी है, सिर्फ एक नजरिए से मीडिया उपभोग नहीं करना है बल्कि इसे कई कोणों से देखना जरूरी है। इस संदर्भ में फिफि सचवार्च ने कहा ' ' मीडिया लिटरेसि में जब मीडिया के आलोचनात्मक विश्लेषण की बात बताई जाती है, तो इसका यह गलत अर्थ निकाल लिया जाता है कि मीडिया पर भरोसा न करो। जबकि यह अवधारणा जनसंचार माध्यरमों के सार्थक व भ्रामक दोनों तरह के संदेशों को सही परिप्रेक्ष में समझने की बात करती है''।

समाचार संचेतना (न्यूज लिटरेसि) 'समाचार मीडिया संचेतना' अथवा 'समाचार संचेतना' स्वयं में मीडिया संचेतना की एक अलग शाखा के रूप में स्थापित हो रही है समय के साथ मीडिया संचेतना विषय का विकास हुआ और इसकी विभिन्न शाखाएँ 'डिजिटल संचेतना' व 'समाचार संचेतना' (news literacy) आदि उभर का सामने आई। ब्रूक यूनिवर्सिटी जर्नलिज्म विभाग के डीन हार्वड सचिन्दर के अनुसार ''किसी भी स्रोत से आए समाचार की विश्वीसनीयता जाँचने के लिए आलोचनात्मक विश्लेशषण की निपुणता का प्रयोग करना समाचार संचेतना यानि न्यूरज लिटरेसि है। विश्वसनीय सूचना सक्रिय सूचना होती है। यह समाचार उपभोक्ता को सक्रिय रूप से किसी निष्कर्ष पर पहुंचने में मदद करती है'' ।

समाचार संचेतना के विकास पर अकादमिक व प्रोफेशनल्स दोनों वर्गों के लोगों ने काम किया लेकिन पेशेवर लोगों से संबद्ध संगठनों का दावा है कि यह अवधारणा उनके प्रयासों की देन है। बरेसटिन(2014) का तर्क है ''समाचार संचेतना ज्ञान की एक नई शाखा है जिसके प्रादुर्भाव का श्रेय मीडिया प्रोफेशन्लेस को जाता है न कि किन्ही सिद्धांतविदों के प्रयासों से यह विचार स्थापित हुआ। यह काफी युवा क्षेत्र है जिसे अपनी पहचान बनाने के लिए काफी कुछ करने की जरूरत है''।

संसार के सामने 'न्यू ज लिटरेसि' की अवधारणा उस समस समाने आई जब स्टोनी ब्रूक यूनवर्सि के पत्रकारिता संस्थानि के डीन हावर्ड सचिंदर ने वर्ष 2005 में मीडिया आचार संहिता का

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

एक पाठयक्रम तैयार करते हुए पाया कि अधिकांश विद्यार्थी समाचार मीडिया सिस्टूम की समाज में भूमिका और प्रभाव को लेकर स्पेष्ट समझ नहीं बना पा रहे हैं । अमुक विद्वान ने इस अवधारणा की नींव रखी और बाद में अन्य विद्वानों का इस ओर ध्याान गया कि न्यूज सिस्टम के प्रति आलोचनात्मक समझ विकसित करने के लिए मीडिया लिटरेसि के पाठ्यक्रम से अलग व विशिष्ट तरह का कोर्स होना चाहिए(कोलंबिया रिव्यू ऑफ जर्नलिज्मक, अक्टूबर 2014)।

अध्ययन के उददेश:

1 मीडिया संचेतना के स्थापित पैमानों के अनुरूप भारतीय वयस्कों की समाचार मीडिया संचेतना को समझना।

2 प्रतिभागियों के समाचार मीडिया सिस्टम की बोधपूर्ण जानकारी को जानना।

3 समाचार मीडिया की कार्यप्रणाली की समझ व मीडिया प्रयोगकर्ता की आलोचनात्मक समझ के संबंधों का अन्वेषण।

4 मीडिया संचेतना से प्रस्फुटित आलोचनात्मक विश्लेतषण की निपुणता व समाचार से जुड़े भ्रामक सूचनाओं के जोखिम के प्रति वयस्कों के सचेत भाव का अन्वेषण।

5 समाचार में भ्रामक संदेशों को समझने में सक्षम प्रत्यर्थियों का संभावित भ्रामक संदेशों के प्रति संज्ञानात्मक रक्षा भाव को जानना।

सांराश अध्ययन के आधार पर सांराश रूप में यह कहा जा सकता है वैश्विक स्तर पर मीडिया लिटरेसि को 21 वीं सदी की लिटरेसी मानने का विचार निश्चिक्रित रूप से व्यावहारिक साबित होता है, यह अमुक शोध में भी प्रतिबिम्बित होता है युनेस्को जैसे संगठन व अन्य विद्वानों द्वारा प्रदत्तक इस विचार के आधार पर नागरिकों के समाचार मीडिया उपभोग व उनकी लोकतंत्र में भागीदारी को सीधा जोड़ कर देखा जाता है। प्रस्तुत शोध में भी यह बात परिलिक्षित होती है। शोध परिणाम दर्शाते है कि समाचार मीडिया का सजगता पूर्वक उपभोग करने वाले व्यस्क उन भ्रामक संदेशों का आभास करने में सक्षम है जिससे उनकी लोकतंत्र प्रतिभागिता नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है। निष्कर्षत परिणाम इंगित करते है कि मीडिया संचेतना का यह सिद्धात "मीडिया के प्रति स्वस्थो संदेह भाव (healthy doubt) मीडिया प्रयोगकर्ता में संज्ञानात्मक रक्षा बोध (cognitive defence) विकसित करता है जिससे हानिकारक संदेशो से खुद की रक्षा कर सकते है"

संदर्भ सूची:

अश्वरघोष, सौंदर न्दमं, सर्ग 4, चौखम्भा प्रकाशन, नई दिल्ली,1990

क्रिसटिन, टाइनसटन रू सूड मीडिया बी सीकिंग डू डेवल्प द सस्टे नबिलिटी डिबेट http://www-theguardian-com/sustainable&business/media & influence & sustainability & debate½

डाइडरॉट , डेनिस . इन्सामइक्लोपीडिआई 1755, विकिपिडिया

जेनिटस, ऐने द गलोबल न्यूरज चौलेंज, मार्केट स्टगरेटिजि ऑफ इन्टरनेशनल ब्रॉडकास्टिचग आर्गेनाइजेश्नसस इन डेवल्पिं ग कंट्रिज, पृष्ठ संख्या 110.

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

जोहना मार्टिनशन, द रॉल ऑफ मीडिया लिटरेसि इन गवर्नमेंट एजेंडा, कम्युमनिकेशन फॉर गवर्नमेंट एंड एकाउंटबिलिटि प्रोग्राम रिपोर्ट (वाशिंगटन डीसी), पृष्ठे 3

पॉटर, जेम्स . मीडिया लिटरेसि,2005, सेज प्रकाशन , पृष्ठ , 10 बकिंगहम, डेविड. आफटर द डेथ ऑफ चाइल्ड हुड, ग्रोइंग अप इन द ऐज ऑफ इलैक्ट्रानिक मीडिया, 2000, पृष्ठ सं 77.

बेकर, फ्रेंक. क्लो ज रीडिंग वट इट मिन्से फॉर मीडिया लिटरेसि मिडल वेब, 2014: बेब लिंक

http://www-middleweb-com/15929/close&reading&and&media&literacy/

ब्लैट, सिल्टवर, आर्ट. मीडिया लिटरेसि, की टू इन्टरप्रिटेशन, पृष्ठ 12.

लिडंसी बेरिसटिन केन न्यूजि लिटरेसि ग्रो अप, कोलम्बिया रिव्यू ऑफ जर्नलिज्मा लिंक http://www- cjr-org/ feature/can_news_literacy_grow_up-php\page¾all#sthash-RXsH8t6F-dpuf

लिपमैन, वॉल्ट.र. विकिपिडिया (http://en-wikipedia-org/wiki/Walter_Lippmann)

सेंटर फॉर मीडिया लिटरेसि न http://www-medialit-org/reading&room/canadas&key&concepts&media&literacy

हॉब्स, रेनी. डिसाइडिंग वॉट टू बिलिव इन एन ऐज ऑफ इन्फोर्मेशन अबन्डेध्न्सप रू एक्सपलोरिंग नॉन फिकशन इन टेलिविजन एजुकेशन, सेक्रट हार्ट रिव्यू, 1998, वोल्यूम 18,इष्यू 1, पृष्ठ 14

श्रीवास्तव, सोनल. बुद्धाज विज्ड म, स्पी,किंग ट्री, पृष्ठ 18, नवंबर 2013 अंक. वेब लिंक http://www-speakingtree-in/spiritual&articles/lifestyle/the&buddha&wisdom/comments/page&3